41

परीक्षा का समय

बाइबल पाठ #16

V. दूसरे से तीसरे फसह तक (क्रमशः)।
   भ. यीशु का हेरोदेस के इलाके से निकना (और वापस आना) (क्रमशः)।
      2. पांच हजार पुरुषों को खिलाना (मत्ती 14:13-21; मरकुस 6:33-44; लूका 9:11-17; यूहन्ना 6:2-14)।
      3. पानी पर चलना (मत्ती 14:22-36; मरकुस 6:45-56; यूहन्ना 6:15-21क)।
   म. जीवन की रोटी पर यीशु का सन्देश (और पतरस का अंगीकार)(यूहन्ना 6:21ख-71)।

परिचय

यह पाठ यीशु के सबसे प्रसिद्ध आश्चर्यकर्मों में से एक, अर्थात पांच हज़ार लोगों को भोजन कराने से आरम्भ होता है। इसका समापन उसकी सबसे गम्भीर शिक्षाओं में से एक अर्थात जीवन की रोटी पर उपदेश से होता है। इनमें से पहला आश्चर्यकर्म पृथ्वी पर उसकी सेवकाई के चरम का था; जबकि दूसरे के बाद से सबसे निम्न समय की शुरुआत हुई।

इस पाठ में, हम दो शब्दों पर ध्यान केन्द्रित रखेंगे। पहला शब्द ''परीक्षा'' है। भीड़ को खिलाने से पहले यीशु ने फिलिप्पुस से पूछा था, ''हम इनके भोजन के लिए कहां से रोटी मोल लाएं?'' (यूहन्ना 6:5ख)। यूहन्ना ने लिखा है कि प्रभु ''उसे *परखने* के लिए'' कह रहा था (यूहन्ना 6:6)। ऐसे मसीह सब प्रेरितों को परखता रहता था।

दूसरा शब्द ''विश्वास'' है। जीवन की रोटी के उपदेश में, ''विश्वास'' अलग-अलग रूप में कई बार मिलता है (यूहन्ना 6:29, 35, 36, 40, 47)। हम पहले ही देख चुके हैं कि यीशु विश्वास की आवश्यकता पर अधिक ज़ोर देने लगा था।[1]

मसीह के लिए अपने अनुयायियों को परखने का अर्थात यह सिद्ध करने का कि वे वास्तव में उसमें विश्वास करते हैं या नहीं, समय आ चुका था। इस पाठ की प्रत्येक घटना में ''परखना'' और ''विश्वास'' शब्द नहीं मिलेंगे। परन्तु उन के लिए, जो प्रभु के पीछे चलने का दावा करते थे, हर घटना उनके विश्वास की परख थी।

घास वाले मैदान पर एक परीक्षा (मत्ती 14:13-21; मरकुस 6:33-44; लूका 9:11-17; यूहन्ना 6:2-14)

हमारे पिछले पाठ के अन्त में यीशु ने चाहा था कि वह और उसके प्रेरित गलील की झील के उत्तरी छोर तक किश्ती से जाएं (मरकुस 6:30-32; देखें मत्ती 14:13; यूहन्ना 6:1)।[2] उन्होंने बैतसैदा-जूलियास नामक एक गांव के निकट कहीं जाना था (लूका 9:10)।

उनके किनारे तक पहुंचने पर सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा हो गई, जो पल-पल बढ़ती ही जा रही थी।[3] मसीह ने अपनी करुणा से "उन पर तरस खाया।" सामान्य की तरह, वह उन्हें सिखाने और उनके रोगियों को चंगा करने लगा (मत्ती 14:14; मरकुस 6:34; लूका 9:11)।

विश्वास परखा गया: "क्या तुझे भरोसा[4] है
कि मैं तेरी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता हूं?"[5]

दोपहर तक, भीड़ की संख्या हज़ारों में पहुंच गई थी (लूका 9:14)। परन्तु आरम्भ हुई:

> तब यीशु ने अपनी आंखें उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और फिलिप्पुस से कहा, कि हम इन के भोजन के लिए कहां से रोटी मोल लाएं? परन्तु उस ने यह बात उसे परखने के लिए कही; क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या करूंगा (यूहन्ना 6:5, 6)।

फिलिप्पुस ने मसीह के शब्दों को गिनती करने की उसकी योग्यता को परखने के रूप में देखा। उसने उत्तर दिया, "दो सौ दीनार की रोटी उनके लिए पूरी न होंगी कि उन में से हर एक को थोड़ी-थोड़ी मिल जाए" (यूहन्ना 6:7)।

उसके थोड़ी देर बाद यही बात दूसरे प्रेरितों के विश्वास को परखने के लिए कही गई:

> जब सांझ हुई, तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, यह तो सुनसान जगह है और देर हो रही है। लोगों को विदा किया जाए कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिए भोजन मोल लें। यीशु ने उनसे कहा, उनका जाना आवश्यक नहीं; तुम ही इन्हें खाने को दो (मत्ती 14:15, 16)।

भीड़ को "खाने को" देने की मसीह की आज्ञा से उन बारहों को लगा कि वह भोजन उपलब्ध कराने की उनकी क्षमता को परख रहा है। उनके पास अपना कोई सामान नहीं था,[6] और भीड़ में से केवल एक लड़के के पास ही भोजन मिला था (मत्ती 14:17)।

याद रखें कि यीशु के चेलों ने पहले भी उसके कई आश्चर्यकर्म देखे थे, जिनमें तूफ़ान को शान्त करना और मुर्दों को जिलाना शामिल था। इस अवसर पर उन्होंने बीमार को चंगा होते देखा था। इसके अलावा यीशु ने हाल ही में उन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी थी

(मज़ी 10:1)। तौ भी उन्हें यह समझना कठिन लगा कि यदि मसीह एक आश्चर्यकर्म कर सकता था तो उसके लिए कोई भी आश्चर्यकर्म करना कठिन नहीं था,[7] चाहे वह स्त्रियों व बच्चों के अलावा कुछ रोटियों और मछलियों के साथ पांच हज़ार को खिलाना ही ज़्यों न हो।

उस थोड़े से अनाज अर्थात रोटी के पांच छोटे टुकड़ों और दो छोटी-छोटी मछलियों[8] को लेकर यीशु ने भीड़ को घास पर बैठ जाने को कहा (मज़ी 14:19), ताकि उन्हें भोजन कराया जा सके। इस प्रकार यह परख वहां उपस्थित हर व्यज़्ति की थी। चेलों और भीड़ का कम से कम इतना विश्वास तो था ही कि उन्होंने मसीह की बात मान ली।

परज़ के परिणाम: एक भोजन-और गलतफहमी

आमतौर पर हम परीक्षा देने के बाद इसके परिणामों को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। इस मामले में वहां उपस्थित लोगों के विश्वास को प्रतिफल मिला: एक लड़के का भोजन भूखे हज़ारों लोगों के लिए जितना-चाहो-खाओ वाला बूफा[9] बन गया था:

> और सब खाकर तृप्त हो गए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाईं। और खानेवाले स्त्रियों और बालकों को छोड़कर पांच हज़ार पुरुषों के अटकल थे (मज़ी 14:20, 21; मरकुस 6:41-44; लूका 9:16; यूहन्ना 6:12 भी देखें)।

खाना खाने वाले आनन्दित थे,[10] परन्तु वे यह नहीं समझ पाए कि भोजन भी अपने आप में एक और परख थी: यह परख कि वे यीशु और उसके मिशन को कैसे समझे थे। रोमांचित होकर, वे एक-दूसरे से कहने लगे, ''वह भविष्यवज़्ता[11] जो जगत में आनेवाला था, निश्चय यही है'' (यूहन्ना 6:14)। यह वही था, जिसकी राह वे देख रहे थे![12] कुछ देर बाद ही योजनाएं बनने लगीं और ''वे उसे राजा बनाने के लिए आकर पकड़ना चाहते'' थे (यूहन्ना 6:15)।

''उसे राजा *बनाने* के लिए''? वह तो *जन्म से* ही राजा था (मज़ी 2:2)[13], परन्तु लोगों के मन में सांसारिक राजा की यहूदी अवधारणा थी, जो उनके शत्रुओं के विरुद्ध विजय में उनकी अगुआई कर सकता। यीशु के ताज़ा आश्चर्यकर्म से उनकी कल्पनाएं और उभर आईं: वह सेना का सेनापति ही नहीं, बल्कि इसका ज़्वार्टर मास्टर (फौजी अफसर, जिसके अधिकार में रसद/गोला बारूद आदि का प्रबंध होता है) भी बन सकता था, जो सेना के लिए भोजन की व्यवस्था कर सकता था! वे यह समझने में नाकाम रहे कि उसे सांसारिक राजा की तरह मानना, उसे अपने आत्मिक राजा के रूप में ठुकराने के बराबर था।

उनकी मंशा को जानते हुए, मसीह ने अपने चेलों को भेजकर उनकी योजनाएं विफल कर दीं[14] और भीड़ को विदा कर दिया।[15] फिर, उदास होकर,[16] वह एकांत में प्रार्थना करने के लिए निकट के पहाड़[17] पर चढ़ गया (मज़ी 14:22, 23; मरकुस 6:45, 46; यूहन्ना 6:15-17क)।

तूफ़ानी झील पर एक परीक्षा (मत्ती 14:22-23; मरकुस 6:45-52; यूहन्ना 6:15-21क)

यीशु द्वारा प्रेरितों को किश्ती में कफ़रनहूम जाने के लिए कहने पर स्पष्टतया उन्हें उम्मीद थी कि भीड़ से विदा लेने के बाद वह उनके साथ जाएगा (देखें यूहन्ना 6:17)। वे किनारे के पास रुके होंगे या वे कुछ ही दूरी पर रुककर उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। जब प्रभु नहीं आया, तो वे झील के दूसरी ओर जाने के लिए निकल पड़े।

विश्वास परखा गया: ''क्या तुम्हें भरोसा है कि मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा?''

लगभग आधी झील पार कर लेने पर,[18] वे अचानक एक तूफ़ान में घिर गए, जो उस जगह नई बात नहीं है।[19] यूहन्ना ने लिखा है कि ''आन्धी के कारण झील में लहरें उठने लगीं'' (यूहन्ना 6:18)। मत्ती ने जोड़ा है कि वे ''लहरों से डगमगा'' रहे थे (मत्ती 14:24)। आन्धी पश्चिम की ओर से चल रही थी, जिधर वे जाने की कोशिश कर रहे थे (मत्ती 14:24; मरकुस 6:48), कि वे खेते-खेते घबरा गए (मरकुस 6:48)। वे कई घंटे खेते रहे,[20] परन्तु लहरें उन्हें आगे बढ़ने के लिए रास्ता नहीं दे रही थीं। हम उनकी थकान और निराशा की केवल कल्पना ही कर सकते हैं। एक बार फिर, उनका विश्वास परखा जा रहा था।[21] यीशु ने उन्हें पहले भी एक तूफ़ान को शान्त करके बचाया था,[22] परन्तु इस बार वह उनके साथ नहीं था। इस बार वह उनसे काफ़ी दूर था।

मसीह उनसे मीलों दूर था, परन्तु वह उनकी दुर्दशा को जानता था। मरकुस ने लिखा है:

> और जब सांझ हुई, तो नाव झील के बीच में थी, और वह अकेला भूमि पर था। और *जब उस ने देखा, कि वे खेते-खेते घबरा गए हैं,* क्योंकि हवा उन के विरुद्ध थी, तो रात के चौथे पहर के निकट वह झील पर चलते हुए उन के पास आया ... (मरकुस 6:47, 48)।

पानी पर चलना यीशु के आश्चर्यकर्मों में से एक है। अपने मन में उसकी तस्वीर बनाते हुए जैसे आमतौर पर दिखाया जाता है, आप उसके शान्त, समतल जगह के ऊपर से जाने की कल्पना न करें, बल्कि उसे लहरों के बीच तूफ़ानी समुद्र पर आगे बढ़ते हुए एक चोटी से दूसरी चोटी पर पैर रखते देखें।

मसीह के किश्ती के निकट आने पर चेलों को उसकी एक झलक मिली, जो शायद बिजली चमकने के कारण थी। उसकी अप्रत्याशित उपस्थिति से वे तूफ़ान से भी अधिक डर गए।[23] ''चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए और कहने लगे, वह भूत है; और डर के मारे चिल्ला उठे''[24] (मत्ती 14:26; मरकुस 6:49, 50क)। यीशु ने उन्हें आवाज़ देकर उनका भय निकाला कि ''ढाढ़स बांधो, मैं हूं; डरो मत'' (मत्ती 14:27; मरकुस 6:50ख; यूहन्ना 6:20 भी देखें)।

फिर हमें मत्ती 14 अध्याय में पतरस के पानी पर चलने की अद्भुत कहानी मिलती है। उसने मसीह को पुकारा, ''हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने

की आज्ञा दे'' (आयत 28)। ''उसने कहा, आ। तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा'' (आयत 29)। मैंने कई बार ये टिप्पणियां सुनी हैं कि जब तक पतरस यीशु को देख रहा था, तब तक तो वह पानी के ऊपर रहा, परन्तु जैसे ही उसका ध्यान समुद्र की लहरों पर पड़ा तो, ''वह डर गया'' और डूबने लगा (आयत 30क)। वह पुकार उठा, ''हे प्रभु, मुझे बचा!'' (आयत 30ख)। ''यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उससे कहा, हे अल्प-विश्वासी, तूने ज़्यों संदेह किया?'' (आयत 31)। हम में से कइयों की तरह पतरस का विश्वास आरज़्भ करने के लिए तो था, परन्तु अन्त तक स्थिर रहने वाला नहीं।

परीक्षा के परिणाम: शान्ति और उलझन

चेलों ने यीशु और परतस की किश्ती में चढ़ने में सहायता की (देज़ें यूहन्ना 6:21क; मज़ी 14:32क)। तुरन्त,[25] ''हवा थम गई: और वे बहुत ही आश्चर्य करने लगे'' (मरकुस 6:51)। तब ''जो नाव पर थे, उन्होंने उसे दण्डवत करके कहा, सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है!'' (मज़ी 14:33)।

लगता है कि यह कहानी का सुखद अन्त था, परन्तु मरकुस के विवरण से संकेत मिलता है कि वास्तव में प्रेरित एक गज़्भीर परीक्षा में असफल हो गए थे। मरकुस ने लिखा है कि ''वे बहुत ही आश्चर्य करने लगे ज़्योंकि वे उन रोटियों के विषय में न समझे थे'' (मरकुस 6:51ख, 52क)। अपनी चिन्ता व्यज़्त करने के अलावा, मसीह के हर आश्चर्यकर्म का थियोलॉजिकल अर्थ था। चेलों को ''उन रोटियों के विषय में'' ज़्या बात समझ आनी चाहिए थी? उन्हें पता चल जाना चाहिए था कि यदि उसमें उन्हें मैदान पर खाना खिलाने की सामर्थ थी, तो झील पर भी वह उन्हें बचाने की सामर्थ रखता था।

मरकुस के अनुसार उनकी समस्या यह थी कि ''उन के मन कठोर हो गए थे'' (मरकुस 6:52ख)। उन्हें यीशु की कुछ समझ आ गई थी, जो विश्वास का केवल एक माप था। परन्तु उनके लिए अपने जीवन और मन पूर्ण रूप से समर्पित करना कठिन था। यह विशेष समस्या न तो उन बारह प्रेरितों से आरज़्भ हुई न ही खत्म।

लोगों से भरे आराधनालय में एक परीक्षा (मज़ी 14:34-36; मरकुस 6:52-56; यूहन्ना 6:21ख-71)

उस तूफ़ानी रात में एक और आश्चर्यकर्म हुआ था। यूहन्ना ने लिखा है कि जैसे ही यीशु और पतरस किश्ती में गए, ''तुरन्त वह नाव उस स्थान पर जा पहुंची, जहां वे जा रहे थे'' (यूहन्ना 6:21ख)। वे दक्षिणी कफ़रनहूम के उपजाऊ क्षेत्र गन्नेसरत के मैदान[26] में किनारे पर पहुंच गए (मज़ी 14:34; मरकुस 6:53)। रोगियों को चंगा करते हुए, यीशु रास्ते में उज़र में कफ़रनहूम की ओर निकल गया (मज़ी 14:35, 36[27]; मरकुस 6:54-56)।

इसी दौरान, समुद्र के उज़र में जमा भीड़ को पता चल गया कि यीशु वहां नहीं है (यूहन्ना 6:22, 24)। पश्चिमी तट से किश्तियां आने पर यीशु को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वे कफ़रनहूम

जा पहुंचे (यूहन्ना 6:23, 24)।[28]

विश्वास परखा गया: ''ज़्या तुझे यकीन है कि मैं तुझे जीवन दूंगा?''

मसीह को ढूंढ़ने वाले लोगों ने उसे आराधनालय में लोगों को सिखाते हुए पाया (यूहन्ना 6:59)। इस बात से परेशान कि वह उन्हें बिना बताए कैसे चला गया (यूहन्ना 6:22), उन्होंने पूछा, ''हे रब्बी, तू यहां कब आया?'' (यूहन्ना 6:25ख)। यह उस दिन प्रभु से पूछे जाने वाले कई प्रश्नों में से पहला प्रश्न था। उससे प्रश्न पूछने वालों को लगा कि वे उसकी परीक्षा ले रहे हैं; जबकि परीक्षा वास्तव में उन प्रश्न पूछने वालों की हो रही थी। यह उनके विश्वास को या कहें कि विश्वास की कमी को दिखाता था। एक अर्थ में, भीड़ से लेकर प्रेरितों तक सब की परीक्षा थी। यीशु वहां उपस्थित हर व्यक्ति से यह कहलाना चाहता था, ''मुझे इस व्यक्ति की *कौन सी बात* आकर्षित करती है? मैं इसके पीछे *ज़्यों* आ रहा हूं? मुझे ज़्या लगता है कि वह *कौन* है?''

(1) *भीड़ की परीक्षा हुई।* कफ़रनहूम में आने सज़्बन्धी प्रश्न का उज़र देने के बजाय, यीशु ने जीवन की रोटी के विषय पर उपदेश देने से आरज़्भ किया। उसने भीड़ पर गलत उद्देश्य से उसके पीछे आने का आरोप लगाया:[29]

> ... मैं तुम से सच-सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने अचज़्भित काम देखे, परन्तु इसलिए कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए। नाशवान भोजन के लिए परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिए जो अनन्त जीवन तक ठहरता है (यूहन्ना 6:26, 27क)।

मसीह अपने सुनने वालों को अपने उद्देश्यों और प्राथमिकताओं को बताने का प्रयास कर रहा था, परन्तु उन्हें यह सुनाई दिया कि यदि वे *काम* करें, तो उन्हें *अविनाशी भोजन* मिल सकता है। उन्होंने पूछा, ''परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम ज़्या करें?'' (यूहन्ना 6:28)। इससे यीशु को अपनी बात समझाने का अवसर मिल गया: ''परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उस ने भेजा है, *विश्वास करो*'' (यूहन्ना 6:29)।

भीड़ को यह अच्छा नहीं लगा कि चर्चा का विषय बदल रहा है। फरीसियों का अनुसरण करते हुए (देखें मज़ी 12:38), उन्होंने उससे चिह्न दिखाने के लिए कहा: ''फिर तू कौन सा चिह्न दिखाता है कि हम उसे देखकर तेरी प्रतीति करें, तू कौन सा काम दिखाता है?'' (यूहन्ना 6:30)। एक दिन पहले ही मसीह ने उन्हें चंगाई के चिह्न दिखाए थे और आश्चर्यकर्म से खाना खिलाया था, परन्तु यह काफ़ी नहीं था। उन कठोर मन वाले लोगों के लिए, कोई भी चिह्न काफी नहीं था।

उन्हें तो वास्तव में एक और मुज़्त भोजन चाहिए था। आखिर, उन्होंने यह तो मान लिया था कि यीशु मूसा जैसा एक नबी है,[30] और मूसा ने उनके पूर्वजों को जंगल में केवल एक बार ही नहीं, बल्कि हर रोज भोजन दिया था (यूहन्ना 6:31; निर्गमन 16)! यीशु ने उज़र दिया कि उन्हें रोटी मूसा ने नहीं, बल्कि परमेश्वर ने दी थी (यूहन्ना 6:32क)। इसके

अलावा, परमेश्वर अब उन्हें ''सच्ची रोटी स्वर्ग से'' दे सकता था, जो ''जगत को जीवन देती है'' (यूहन्ना 6:32ख, 33ख)।

रोटी जो ''जीवन देती है,'' यही तो वे चाहते थे! वे कहने लगे ''हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर'' (यूहन्ना 6:34)।[31] एक बार फिर यीशु के ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी और लोगों ने उसका स्वागत भी नहीं किया। उसके होंठों से यह हैरान करने वाली बात निकली: ''जीवन की रोटी *मैं* हूं'' (यूहन्ना 6:35क)। यह यूहन्ना की पुस्तक में पाए जाने वाले मसीह के ''मैं हूं'' कथनों में से पहला था।[32] हर कथन का अपना महत्व है, परन्तु हर कथन उसके परमेश्वर होने की पुष्टि करता था, क्योंकि कभी भी और किसी भी युग में केवल परमेश्वर ही कह सकता है कि ''मैं हूं'' (अन्य शब्दों में, ''मैं सर्वदा विद्यमान हूं''; देखें निर्गमन 3:13-15)।

यीशु ने अवाक् कर देने वाली बात जारी रखी: ''जो मेरे पास आएगा, वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा'' (यूहन्ना 6:35ख)। इसमें यह ज़ोर देने वाला शब्द ''विश्वास'' फिर था![33] अफसोस के साथ उसने और जोड़ा, ''परन्तु ... तुम ने मुझे देख भी लिया है, तौभी विश्वास नहीं करते'' (यूहन्ना 6:36)। जे.डब्ल्यू मैज़र्वे ने लिखा है,

> यीशु का व्यक्तित्व उसके ईश्वरीय होने का बहुत बड़ा प्रमाण था, परन्तु यहूदियों ने ... इस पर विचार करने से इनकार कर दिया और चिह्न की रट लगाते रहे ... यदि कोई सूरज के प्रकाश को देखकर, उसकी गरमी को महसूस करके और जीवन देने वाली उसकी सामर्थ का साक्षी होने के बावजूद विश्वास न करे, तो सूरज के अस्तित्व को दिखाने के लिए उसे कौन सा चिह्न दिया जा सकता है?[34]

(2) ''*यहूदियों*'' *की परीक्षा हुई।* इस बात पर ''यूहदी'' बुड़बुड़ाने लगे ''इसलिए कि उस ने कहा था; कि जो रोटी स्वर्ग से उतरी, वह मैं हूं'' (यूहन्ना 6:41)। यूहन्ना ने यहूदी अगुओं के लिए ''यहूदी'' शब्द का इस्तेमाल कई बार किया (यूहन्ना 1:19; 5:10, 15, 16, 18), और शायद यहां इसका यही अर्थ है।

यहूदियों के कुड़कुड़ाने के बावजूद यीशु ने अपना दावा नहीं छोड़ा, बल्कि और दृढ़ता से कहा:

> जीवन की रोटी मैं हूं। तुम्हारे बाप-दादों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। यह वह रोटी है, जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उस में से खाए और न मरे। जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिए दूंगा, वह मेरा मांस है (यूहन्ना 6:48-51)।

आत्मिक जीवन लाने के लिए (यूहन्ना 10:10) यीशु को देहधारी बनना पड़ा था

(यूहन्ना 1:14)। इसके अलावा कुछ ही महीनों में, उसने अपनी देह ''संसार को जीवन देने के लिए'' क्रूस पर लटकाने के लिए स्वेच्छा से ''दे'' देनी थी। बंद दिमाग वाले यहूदियों के लिए ऐसी बड़ी अवधारणाओं को समझना दूर की कौड़ी थी। मसीह को विनम्रतापूर्वक इसका अर्थ समझाने के लिए कहने के बजाय, वे ''यह कहकर आपस में झगड़ने लगे, कि यह मनुष्य ज़्योंकर हमें अपना मांस खाने को दे सकता है?'' (यूहन्ना 6:52)। यीशु का उज़र और भी चकित करने और उलझाने वाला था: ''मैं तुम से सच-सच कहता हूं, जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लोहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं'' (यूहन्ना 6:53)।

यहूदी लोग धार्मिक अर्थ में ''रोटी ज़ाने'' के रूपक से परिचित थे। डेविड स्मिथ ने ध्यान दिलाया है, ''आज के कानों के बजाय यहूदियों के लिए ऐसी भाषा कम अजीब होगी, ज़्योंकि पवित्र शास्त्र तथा रज़्बियों के साहित्य दोनों में उपदेश को *रोटी* कहा जाता था और इसे मानने वालों को इसे खाना होता था।''[35] इसी प्रकार, मांस खाने और लहू पीने की बात समझना उनके लिए कठिन नहीं होना चाहिए था। व्यवस्था में मांस खाने और लहू पीने को गलत भी बताया गया था (लैव्यव्यवस्था 17:10-14)।

निस्संदेह, यीशु अपने मांस के खाने और अपने लहू पीने की बात मांसखोर होने के अर्थ में नहीं कर रहा था,[36] बल्कि ''देह में'' उसके मसीहा होने की बात स्वीकार करने को कह रहा था। वास्तव में संदेह करने वालों को उस ने पहले ही बता दिया था कि ''उसका मांस'' कैसे ''ज़ाना'' है, परन्तु वे सुनने को तैयार ही नहीं थे:

> ... परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर जिसे उस ने भेजा है, *विश्वास* करो (यूहन्ना 6:29)।
>
> ... जो मुझ पर *विश्वास* करेगा, वह कभी प्यासा न होगा (यूहन्ना 6:35)।
>
> ... तुम ने मुझे देख भी लिया है, तौ भी *विश्वास* नहीं करते (यूहन्ना 6:36)।
>
> ज़्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर *विश्वास* करे, वह अनन्त जीवन पाए ... (यूहन्ना 6:40)।
>
> मैं तुम से सच-सच कहता हूं, कि जो कोई *विश्वास* करता है, अनन्त जीवन उसी का है (यूहन्ना 6:47)।

इस पर विचार करें: यीशु ने कहा कि ''जो कोई विश्वास करता है *अनन्त जीवन उसी का है*'' (यूहन्ना 6:47; आयत 40 भी देखें)। इसके थोड़ी देर बाद उसने कहा, ''जो मेरा मांस खाता, और मेरा लोहू पीता है, *अनन्त जीवन उसी का है*'' (यूहन्ना 6:54क)। जब तक जीवन के लिए दो मार्ग न हों (मार्ग तो केवल एक ही है; यूहन्ना 14:6), ''उसका

मांस खाना और उसका लहू पीना'' ''उसमें विश्वास करने'' की तरह ही है।

हमें विश्वास उसके बारे में जानकर और जो कुछ जाना है उसे, मानकर आता है। मसीह ने कहा, ''भविष्यवक्ताओं के लेखों में यह लिखा है, कि वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे।[37] जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है'' (यूहन्ना 6:45)। उसने यह भी कहा, ''जो बातें मैं ने तुम से कही हैं, वे आत्मा हैं और जीवन भी हैं'' (यूहन्ना 6:63ख)।

भोजन खाने की तरह हम यीशु से सीखते, उसे ग्रहण करते, उसमें विश्वास लाने और उसकी आज्ञा मानते हैं। जैसे खाया जाने वाला भोजन शरीर में जज़्ब हो जाता है, वैसे ही मसीह के विचार और स्वभाव हमारी आत्माओं में जज़्ब हो जाने चाहिए। जॉनी रैज़्से ने लिखा है, ''वह अनुरोध कर रहा है, 'मेरा आत्मा सोख लो, मेरी सोच की नकल करो, मेरी अगुआई में चलो; हां स्वर्ग के मार्गों में खो जाओ!' ''[38] हमें अपने अन्दर पौलुस के साथ, ''... अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है'' (गलातियों 2:20) कहने तक ''मसीह का रूप'' बनाने के लिए (गलातियों 4:19), ''ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो'' जाने की चुनौती दी गई है (2 पतरस 1:4)।

यूहन्ना 6 में अपने मांस के खाने और अपने लहू के पीने की बात करते हुए यीशु के मन में प्रभु-भोज नहीं था। हमारे लिए, जो भोज के अर्थ से परिचित हैं, 53 से 56 आयतों में मसीह की शज़्दावली को ध्यान में रखना स्वाभाविक है। परन्तु संदर्भ स्पष्ट है कि मसीह का ध्यान मसीही लोगों के भोज में भाग लेने पर नहीं, बल्कि यहूदियों द्वारा उसे मसीहा स्वीकार करने पर था। जीवन की रोटी के उपदेश का मुद्दा विश्वास या इसकी कमी, ही है।

(3) *चेलों की परीक्षा हुई।* तनाव बढ़ता रहा: ''... उसके चेलों में से बहुतों ने यह [जीवन की रोटी के बारे में यीशु की बातें] सुनकर कहा, कि यह बात नागवार है; इसे कौन सुन सकता है?'' (यूहन्ना 6:60)। याद रखें कि कुड़कुड़ाने वाले लोग (यूहन्ना 6:61क) न तो उसके शत्रु थे और न रोटी के लिए उसके पीछे आने वाली भीड़ के प्रतिनिधि, बल्कि वे उसके *चेले* थे, जिन में से कई तो लज़्बे समय से उसके साथ थे। (''चेले'' शज़्द उन बारह [यूहन्ना 6:64] के अलावा थोड़ा-बहुत उसके शेष पूर्णकालिक चेलों के लिए है [लूका 6:13]।)

यीशु की शिक्षा से उसके अनुयायी परेशान ज़्यों हुए? यह एक राजनैतिक, तलवार चलाने वाले मसीहा के प्रति उनकी पूर्वधारणा के विपरीत था। अफसोस के साथ, मसीह ने उनसे पूछा, ''ज़्या इस बात से तुज़्हें ठोकर लगती है? और यदि तुम मनुष्य के पुत्र को, जहां वह पहिले था, वहां ऊपर जाते देखोगे, तो ज़्या होगा?'' (यूहन्ना 6:61ख, 62)। अन्य शज़्दों में, ''यदि शारीरिक के बजाय आत्मिक पर मेरे ध्यान लगाने के कारण तुज़्हें मुझे मसीहा मानना कठिन लग रहा है, तो मेरे उस राज्य को स्थापित किए बिना, जिसकी तुम प्रतीक्षा कर रहे हो पृथ्वी से चले जाने पर तुम ज़्या करोगे?'' यीशु के स्वर्ग पर उठाए जाने से ही राज्य/कलीसिया, उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद पहले पिन्तेकुस्त के दिन अस्तित्व में आया, परन्तु पहले उसके अनुयायी एक अलग तरह के राज्य का पूर्वानुमान

लगा रहे थे।

यीशु ने फिर ज़ोर दिया कि आत्मिक बातें शारीरिक बातों से कहीं अधिक महत्व रखती हैं (यूहन्ना 6:63); परन्तु एक बार फिर उसने निष्कर्ष निकालना था कि ''... तुम में से कितने ऐसे हैं, जो विश्वास नहीं करते'' (यूहन्ना 6:64क)। मैंने इस पाठ में पहले कहा था कि मसीह के इस उपदेश से उसकी सेवकाई कम होनी आरज़्भ हो गई। यहां से उसकी सेवकाई कम होने लगी: ''इस पर [उस अवसर पर उसकी शिक्षा के कारण] उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले'' (यूहन्ना 6:66)।[39]

यीशु द्वारा विश्वास की परीक्षा पर कुड़कुड़ाना, बहस करना और अन्त में छोड़कर जाना और ठुकराना ही हुआ। उसकी ''कक्षा'' के बहुत से लोग परीक्षा में असफल हो गए।

(4) *प्रेरितों की परीक्षा हुई।* सबसे गज़्भीर परीक्षा तो अभी होनी थी। मसीह ने उन बारह की ओर मुड़कर कहा, ''ज़्या तुम भी चले जाना चाहते हो?'' (यूहन्ना 6:67)। निश्चय ही, उसके शज़्दों में हमें अफसोस और चिन्ता दिखाई देती है।

पतरस के उज़र से उसका मन खिल उठा होगा। प्रेरितों की ओर से बोलते हुए, उसने कहा, ''हे प्रभु हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। और हमने विश्वास किया, और जान गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है'' (यूहन्ना 6:68, 69)। संदर्भ में, मुज़्य शज़्द ''हमने *विश्वास किया*'' हैं। ज़्या उनका पूरा विश्वास था? ज़्या वे पूरी तरह से समझ गए थे कि मसीह कौन है? ज़्या उनके मन में राज़्य की वास्तविक प्रकृति स्पष्ट हो चुकी थी? नहीं, नहीं, नहीं। अभी भी उनका मानना था कि यीशु मसीहा था, और वे उसके प्रति समर्पित थे। उनका विश्वास बढ़ रहा था। वे परीक्षा में पास हो गए थे!

मैं इसे इस प्रकार दोहराता हूं: उनमें से *बहुत से* परीक्षा में पास हो गए थे। पतरस को इसका पता नहीं था,[40] परन्तु उसने उन ग्यारह की ओर से बात की। हमारी इन आयतों से संकेत मिलता है कि जीवन की रोटी के उपदेश से आस-पास की घटनाएं ही यहूदा के अन्त में यीशु को ठुकराने का मुज़्य कारक बनी (यूहन्ना 6:64, 70, 71)।[41] यहूदा इस समय दूसरे लोगों की तरह छोड़कर तो नहीं गया, परन्तु उसका मन अब प्रभु के साथ नहीं था। मसीह द्वारा सांसारिक गद्दी के साथ उससे मिलने वाले लाभों का इनकार कर देने के बाद वह निराश हो गया था[42] (यूहन्ना 6:15)। यीशु की बातें सुनकर भीड़ के चले जाने पर वह भी अविश्वास से भर गया होगा; ज़्योंकि साम्राज़्य स्थापित करने का यह तो कोई ढंग नहीं था। एक समूह के रूप में, उन बारह ने परीक्षा में पास होने के अंक प्राप्त कर लिए थे, परन्तु यहूदा बुरी तरह से फेल हो गया था।

सारांश

प्रेरितों के लिए और भी परीक्षाएं होनी थीं (देखें मज़ी 16:13), परन्तु यीशु के अनुयायी होने का दावा करने वालों पर इस परीक्षा से अधिक प्रभाव नहीं पड़ना था। हम मानें या न मानें, आप और मैं भी वही परीक्षा दे रहे हैं:

1. ज़्या मुझे उस पर भरोसा है कि उसे मेरी आवश्यकताओं का ध्यान है, या परीक्षाएं आने पर मैं घबरा जाता हूं?
2. ज़्या मुझे उस पर भरोसा है कि वह मेरी रक्षा करता है, या जीवन में समस्याएं आने पर मैं भय से कांप जाता हूं?
3. ज़्या मुझे उस पर भरोसा है कि वह मुझे जीवन देता है? यदि है तो मैं उसे अपना जीवन दे दूंगा।

याद रखें: केवल विश्वास और सच्चा विश्वास रखने वालों को ही पास होने के अंक मिलते हैं।

नोट्स

इस पाठ के साथ जोड़ने के लिए प्रवचन चुनने में मुझे दिज़्कत आ रही थी। आश्चर्यकर्म से भोजन खिलाने *और* जीवन की रोटी के उपदेश पर प्रवचन तैयार करना मुझे अच्छा लगा। परन्तु मैं प्रत्येक पाठ के साथ दो प्रवचन रखने की आदत नहीं डालना चाहता था। मैं जीवन की रोटी पर ही ध्यान देने लगा, ज़्योंकि सामान्यतया छात्र इससे कम ही परिचित होते हैं, परन्तु मैंने पांच हज़ार को खिलाने की बात पर ही ध्यान दिया, ज़्योंकि यह प्रारज़्भिक मसीहियों के लिए अति महत्वपूर्ण थी[43] और आज के मसीहियों में भी यह उतनी ही प्रसिद्ध है। इस पाठ के बाद इस घटना पर मेरे कई व्याज़्यात्मक प्रयास मिलेंगे।

यदि मैंने जीवन की रोटी पर प्रवचन तैयार किया होता, तो मेरा ढंग ''गलत उद्देश्यों के लिए परमेश्वर को ढूंढ़ना'' होता। यीशु के पीछे हज़ारों लोगों की भीड़ थी, जो उससे मिलने वाले आत्मिक लाभों के बजाय मुज़्यतया उससे मिलने वाले शारीरिक लाभ के लिए उसके पीछे चल रही थी। हम उसके पीछे ज़्यों आए हैं?

वास्तव में, इस पाठ में धर्मोपदेश की सामर्थ वाला विस्फोटक है। मैंने दूसरों की सहायता करने पर प्रचार के लिए *पांच हज़ार को खिलाना* की कहानी का इस्तेमाल किया। इसे सुसमाचार के प्रचार की आवश्यकता पर प्रवचन के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है: ''भीड़ को खिलाना'': (1) हमें भीड़ की आत्मिक आवश्यकताओं के प्रति उतना ही चिन्तित होना चाहिए, जितना यीशु भीड़ की शारीरिक आवश्यकताओं के लिए होता था। (2) भीड़ को आत्मिक भोजन खिलाने के लिए, हमें अपने संसाधनों की सीमाओं से आगे देखकर प्रभु पर निर्भर रहना सीखना चाहिए। (3) आत्मिक खुराक प्रभु (वचन) से ही आती है। हमारी ज़िज़्मेदारी इसे बनाना नहीं, बल्कि प्रेरितों की तरह इसे बांटना है।

यीशु का पानी पर चलना और तूफ़ान को थामना कहानी पर विचार करें: इस घटना में प्रवचन का शीर्षक ''जब मसीह बहुत दूर लगता है'' हो सकता है। दो सज़्भावित मुज़्य बातें हैं: (1) तूफ़ान तब भी आ जाते हैं, जब आप प्रभु की आज्ञा मान रहे होते हैं। (2) यीशु को *पता* होता है जब आपके जीवन में तूफ़ान उमड़ते हैं। (3) जब तूफ़ान आते हैं तो अपनी कमज़ोरियों की ओर न देखें बल्कि उसकी सामर्थ पर निर्भर रहें। (4) विश्वास

रखें कि वह तूफ़ान को शान्त कर सकता है। (5) शान्त होने पर अप्रत्याशित आशिषें मिल सकती हैं (यूहन्ना 6:21ख)।

ऊपर वाली कहानी के केवल एक भाग पर कई संदेश दिए गए हैं: *पतरस पानी पर चलता है (और डूब जाता है)*–हवा और जीवन की लहरों के बजाय यीशु की ओर देखने पर ज़ोर देते हुए।

यूहन्ना 6 में *जीवन की रोटी पर यीशु के उपदेश* के अन्य पहलुओं पर संदेश दिए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, जीवन की रोटी की कहानी में एक ही आयत का इस्तेमाल अर्थपूर्ण संदेश के लिए स्प्रिंग बोर्ड के रूप में किया जा सकता है: ''हम किसके पास जाएं?'' (आयत 68)। कुछ लोग जब तक उन्हें यह समझ नहीं आ जाता कि वह ही संसार की समस्याओं का एकमात्र व्यावहारिक विकल्प और उनकी आत्माओं की एकमात्र आशा है, यीशु पर गज़भीरतापूर्वक विचार नहीं करते।

फिर, ज़्योंकि भीड़ के मन में जंगल में मिलने वाला मन्ना था, इसलिए मसीह ने इसकी तुलना जीवन की रोटी से की। आप इस तुलना को दिखाता एक चार्ट तैयार कर सकते हैं, जिसका इस्तेमाल प्रचार करने के लिए रूपरेखा के रूप में किया जा सके। नीचे आपकी सोच को बढ़ाने के लिए एक चार्ट का नमूना दिया गया है।

टिप्पणियां

[1]इस पुस्तक में पहले आए ''ज़्या तू विश्वास करता है?'' पाठ का परिचय दोबारा पढ़ें। [2]आपको चाहिए कि छोड़ जाने की यीशु की सलाह पर फिर से विचार करें। (पिछले पाठ का अन्तिम भाग फिर पढ़ें।) [3]इस घटना के पूर्णविवरण के लिए अगला प्रवचन देखें। पाठ में यहां पर, आपको कम से कम इस घटना के महत्व पर ज़ोर देना होगा। (''जब लोगों को सचमुच आवश्यकता होती है'' पाठ का परिचय देखें।) [4]मैं उप-शीर्षकों में ''भरोसा'' शज़्द का इस्तेमाल कर रहा हूं, ज़्योंकि उद्धार दिलाने वाले विश्वास के लिए भरोसा एक आवश्यक तत्व है। [5]यद्यपि पवित्र शास्त्र में यही वाज़्य नहीं मिलता, परन्तु उप-शीर्षकों के रूप में मेरे इस व अन्य प्रश्नों से उन परीक्षाओं की झलक मिलती है, जो यीशु अपने प्रेरितों को दे रहा था। [6]इसका अर्थ समझा जा सकता है। यदि वे कुछ भोजन लेकर आए होते, तो वे अवश्य ही यीशु को बताने के समय कह देते कि उनके पास ज़्या था। यह तथ्य कि वे नहीं लाए थे, सज़्भवतया उनके हेरोदेस के इलाके को छोड़कर जाने की अत्यावश्यकता का संकेत है। उन्होंने सज़्भवतया पास के किसी नगर से भोजन खरीदने की योजना बनाई थी (देखें यूहन्ना 4:8)। [7]इस सज़्बन्ध में उनकी अयोग्यता पर बाद में हमारी कहानी में ज़ोर दिया गया है; पढ़ें मरकुस 6:42. [8]रोटियों और मछलियों के आकार के सज़्बन्ध में, अगला प्रवचन देखें। [9]''जितना खा सकते हो खाओ बूफा'' वाज़्यांश अमेरिका में इस्तेमाल किया जाता है। वहां भोजनालयों में अपनी प्लेटें तब तक भरते रहने की अनुमति होती है, जब तक ग्राहक तृप्त नहीं हो जाता। मैंने इसका इस्तेमाल यहां इसलिए किया है, ज़्योंकि सुसमाचार के अधिकतर विवरण इस बात पर ज़ोर देते हैं कि लोग खाकर ''तृप्त'' हो गए थे। [10]यूहन्ना 6:26 से उनके जोश का पता चलता है।

[11]लोगों के मन में स्पष्टतया मूसा की बात थी कि परमेश्वर उसके जैसा एक नबी खड़ा करेगा (व्यवस्थाविवरण 18:15)। अगले दिन यीशु के उपदेश से संकेत मिलता है कि लोग उसकी तुलना मूसा से कर रहे थे (देखें यूहन्ना 6:31, 32, 49, 58)। [12]यीशु की सेवकाई के अन्त के निकट, ऐसी ही उज़ेजना लोगों

में थी, जब मसीह ने यरूशलेम में विजयी प्रवेश किया था (देखें मत्ती 21:1-11, 14-17; मरकुस 11:1-11; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:12-19)। [13]एक अर्थ है, जिसमें यीशु पिता के पास वापस उठाए जाने तक राजा नहीं बना था, परन्तु ज़्योंकि यीशु ने स्वयं ''यहूदियों का राजा'' होने की बात स्वीकार की (मत्ती 27:11), हमें उन बुद्धिमान लोगों (अर्थात ज्योतिषियों) की बात को सही मानना चाहिए। [14]उसने उन्हें बैतसैदा/कफ़रनहूम में जाने को कहा (मरकुस 6:45; यूहन्ना 6:17)। (यह बैतसैदा कफ़रनहूम के निकट, शायद इसका उप-नगर था।) हमें यह नहीं बताया गया कि यीशु ने अपने चेलों को ज़्यों भेजा। शायद वह भीड़ को प्रभावित करने के लिए उनसे अपनी आज्ञा मनवाना चाहता था। शायद वह उन्हें गुमराह भीड़ के जोश में फंसने से बचाना चाहता था। आखिर, राज्य के बारे में भौतिक गलत धारणाएं उनके मन में भी तो थीं। [15]भीड़ के बहुत से लोग बाहर ही थे (यूहन्ना 6:22), परन्तु यीशु ने उन्हें बिखराकर कम से कम उनके जोश को ठण्डा कर दिया। [16]इसका अर्थ समझ आता है। उदास होने के उसके कई कारण थे। उसके प्रेरितों और भीड़ द्वारा उस अवसर पर दिखाई गई सामान्य गलतफहमी के अलावा उसे अभी अपने रिश्ते के भाई, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के गुज़र जाने पर शोक करने का अवसर भी नहीं मिला था। [17]उस क्षेत्र में एक पहाड़ था (यूहन्ना 6:3)। यीशु भीड़ को सिखाने के लिए पहाड़ के एक ओर बैठ गया होगा और फिर लोगों को खिलाने के लिए मैदान की ओर नीचे आ गया होगा। [18]हिन्दी और NASB में ''तीन चार मील'' है (यूहन्ना 6:19)। KJV में ''पांच और बीस या तीस फर्लांग'' है। यूनानी में पच्चीस या तीस *स्टेडिया* है। *स्टेडिया* लगभग 607 फुट के रोमी माप के लिए *स्टेडियन* का बहुवचन है। [19]पुस्तक में पहले आए पाठ ''यह कौन है'' में गलील की झील पर चर्चा पढ़ें। [20]वे ''संध्या'' के समय ''अंधेरा'' होने पर चले गए थे (देखें यूहन्ना 6:16, 17), परन्तु यीशु उनके पास ''चौथे पहर'' से पहले नहीं आया (मत्ती 14:25; मरकुस 6:48), जो कि प्रातः 3:00 से 6:00 बजे के बीच का समय था।

[21]यीशु ने तूफ़ान को नहीं भेजा, परन्तु जीवन में हर विपत्ति उसमें हमारे विश्वास की परीक्षा होती है। [22]पुस्तक में पहले आए पाठ ''यह कौन है'' का अध्ययन करें। [23]मरकुस का वृत्तांत बताता है कि वह ''उनके आगे से निकल जाना चाहता था'' (मरकुस 6:48)। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि वह उन्हें भयभीत न करने के लिए ''उनके पास से गुज़र जाना चाहता था'' और शायद ऐसा ही था। परन्तु अन्य विवरण संकेत देते हैं कि यीशु ''उनके पास'' जा रहा था (मत्ती 14:25; यूहन्ना 6:19)। मरकुस 6 में अनुदित यूनानी शब्द ''गुज़र जाना'' का अनुवाद ''पास से जाना'' हो सकता है और सम्भवतया इसका यहां यही अर्थ है। [24]यह नहीं बताया गया है कि उन्होंने ज़्यों सोचा कि वह कोई भूत है; परन्तु याद रखें कि उस ज़माने में लोगों के मन में यह अन्धविश्वास पाया जाता था। [25]यह विचार कि ये घटनाएं ''तुरन्त'' घटीं, यूहन्ना 6:21 में सुझाया गया है। [26]कभी-कभी उस क्षेत्र की समीपता के कारण गलील सागर को ''गन्नेसरत की झील'' कहा जाता था (लूका 5:1)। ''मसीह का जीवन, भाग 2'' में पृष्ठ 177 पर ''गलील की झील'' का मानचित्र तथा पृष्ठ 176 पर दिए लेख की समीक्षा करें। [27]इस पुस्तक में पहले आए ''ज़्या तुझे विश्वास है?'' पाठ देखें। [28]किश्तियां तिबरियास से पश्चिमी तट की ओर थीं। मलाहों ने भीड़ को देखा होगा और लोगों को ले जाकर उनसे धन कमाने की आशा की होगी। पहले, भीड़ के लोग कफ़रनहूम से पैदल आए थे, परन्तु कफ़रनहूम में किश्ती से वापस जाना आसान होगा। [29]कागज़ की कमी इस महान प्रवचन की चर्चा एक-एक आयत से करने की आज्ञा नहीं देती। यीशु और उसके प्रश्न पूछने वालों के बीच की बातचीत का सरल संस्करण देना आवश्यक है। [30]इस पाठ में पहले यूहन्ना 6:14 पर नोट्स की समीक्षा करें।

[31]यूहन्ना 4:15 में सामरी स्त्री की विनती के साथ इसकी तुलना करें। यूहन्ना 4 में उस स्त्री के साथ यीशु की चर्चा और यूहन्ना 6 के उसके उपदेश में कई समानताएं हैं। यूहन्ना 4 में यीशु ने पानी के रूपक का इस्तेमाल किया, ज़्योंकि उस स्त्री के मन में पानी था, और यूहन्ना 6 में उसने रोटी के रूपक का इस्तेमाल किया, ज़्योंकि भीड़ का ध्यान रोटी पर था। मुख्य बात दोनों में एक ही है। परन्तु यूहन्ना 4 की चर्चा का परिणाम स्वीकार हुआ, जबकि यूहन्ना 6 का उपदेश ठुकराए जाने से समाप्त हुआ। [32]48 और 51 आयतें भी देखें। ''मैं हूं'' के अन्य वाक्य 8:12, 58; 10:11; 11:25; 14:6; और 15:1 में मिलते हैं। [33]यीशु ने उसमें विश्वास करने की अनिवार्यता पर ज़ोर देने के लिए अतिरिक्त शब्दों का इस्तेमाल किया (देखें यूहन्ना 6:40,

47), परन्तु, जैसे पहले ही कहा गया है, जगह की कमी के कारण प्रत्येक आयत चर्चा करने की अनुमति नहीं देती।[34]जे. डज़्ल्यू. मैज़गर्वे एण्ड फिलिप्प वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 385. [35]डेविड स्मिथ, *द डेज़ ऑफ़ हिज़ फ़्लेश, द अर्थली लाइफ ऑफ़ अवर लॉर्ड एण्ड सेवियर जीज़स क्राइस्ट,* 8वां संस्करण (लंदन: हॉडर एण्ड स्टाउटन, 1910), 241; रॉबर्ट डंकन कल्वर, *द लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 147 में उद्धृत।[36]यह आयत कैथोलिक लोगों द्वारा अपने मांस को उचित ठहराने के लिए इस्तेमाल की जाती है, जिस दौरान वे दावा करते हैं कि रोटी और दाखरस वास्तव में यीशु के मांस और लहू में बदल जाते हैं। परन्तु जब मसीह ने प्रभु भोज की स्थापना की थी, तो उसने स्पष्ट कर दिया था कि यह एक *यादगारी भोज* था (लूका 22:19; 1 कुरिन्थियों 11:24, 25)। इस पर इस श्रृंखला में बाद में चर्चा की जाएगी। जब हम प्रभु भोज की स्थापना पर अध्ययन करेंगे (मत्ती 26:26–29; मरकुस 14:22–25; लूका 22:19, 20; 1 कुरिन्थियों 11:23–26)।[37]पढ़ें यशायाह 54:13; यिर्मयाह 31:33, 34. [38]जॉनी रैज़्से, ''ईट माई फ़्लेश; ड्रिंक माई ब्लड,'' *गॉस्पल मिनट्स* (27 जुलाई 1979): 3. [39]यूहन्ना के विवरण में यहां से, उसने ''चेला'' शब्द का इस्तेमाल केवल ''*सच्चा* चेला'' के अर्थ में नहीं किया।[40]अन्त तक, बाकी प्रेरितों को यहूदा के अविश्वास का पता नहीं था (देखें यूहन्ना 13:21, 22)।

[41]यहूदा कुछ घबराया हुआ है। कुछ लोग उसकी बहुत ही गहरी तस्वीर बनाते हैं (यह कहकर कि ''वह आरम्भ से ही शैतान था!''), जबकि दूसरे प्रभु को बेचने के उसके दुष्ट कार्य के लिए उसे निर्दोष ठहराने का यत्न करते हैं। यहूदा पर अतिरिक्त चर्चा (उसने क्या किया और क्यों किया) इस श्रृंखला में बाद में मिलेगी।[42]यहूदा के मन में पहले से धन था (यूहन्ना 12:6)।[43]अगले प्रवचन ''जब लोगों को सचमुच आवश्यकता होती है'' में इस पर टिप्पणियों का अध्ययन करें।

जीवन की रोटी (यूहन्ना 6:27-58)

मन्ना	जीवन की रोटी
परमेश्वर की ओर से (आयतें 31, 32)	परमेश्वर की ओर से (आयतें 32, 58)
नाशवान (आयत 27)	सदा तक रहने वाली (आयत 27)
शारीरिक (रोटी)	आत्मिक (यीशु; आयतें 35, 48, 51)
इसे खाने वालों को फिर भूख लगी (सांकेतिक)	इसे खाने वाले तृप्त हो जाते हैं (आयत 35)
खाने वाले अन्त में मर गए (आयतें 49, 58)	खाने वाले जीवित रहेंगे (आयतें 33, 40, 47, 50, 51, 58)
खाकर ली गई (आयत 31)	*विश्वास* से ली गई (आयतें 29, 35, 36, 40, 47)